भगवान शिव के अमृतवर्षी महामृत्युंजय स्वरूप के चिन्तन, मनन, अभिषेक, पूजन और साधना से रोग-शोक, चिन्ता, मृत्यु आदि को हमेशा के लिये समाप्त किया जा सकता है, इसलिये मार्कण्डेय ऋषि ने कहा है -

चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः

अर्थात् जब मैं चन्द्रशेखर का आश्रित हूं तो यम मेरा क्या बिगाड़ सकता है?

त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

महामृत्युंजय मंत्र में तीन नेत्रों वाले शिव की पूजा की जा रही है, क्योंकि उनकी आराधना से जीवन में सुगंध, आरोग्य और संपन्नता प्राप्त होती है। तीन नेत्रों वाले भगवान सदाशिव ने काल के तीनों चरण भूत, वर्तमान और भविष्य पर नियंत्रण स्थापित किया हुआ है और साधक को धर्म, अर्थ और काम तीनों प्रदान करते हैं ।

दीर्घायु एवं स्थायी आरोग्य प्रत्येक मानव के लिये परम आवश्यक है, इसके लिये वह प्रतिदिन प्रतिक्षण चिन्तित रहता है और विविध औषधियों तथा उपायों का सहारा लेता है। महामृत्युंजय साधना से साधक निरोगी एवं दीर्घायु बने रहते हैं और उसका जीवन आनन्दपूर्वक व्यतीत होता है।

केवल व्यक्ति का स्वयं स्वस्थ एवं निरोगी रहना ही पर्याप्त नहीं है अपितु उसके परिवार के प्रत्येक सदस्य पत्नी, बच्चे आदि भी स्वस्थ रहें, आकस्मिक दुर्घटना की आशंका न रहे, अकाल मृत्यु का भय न हो। इस हेतु शिव स्वरूप सद्गुरु से महामृत्युंजय शक्तिपात दीक्षा सात चरणों में प्राप्त करें एवं महामृत्युञ्जय साधना को सम्पन्न करें।

महामृत्युंजय दीक्षा आवश्यक

- ☆ महामृत्युंजय दीक्षा से दीर्घायु, यश और वैभव प्राप्त होता है।
- ☆ महामृत्युंजय दीक्षा से कैसी भी बीमारी हो, उस बीमारी से लड़ने और उसे समाप्त करने की शक्ति साधक के भीतर स्वयं उत्पन्न हो जाती है और वह भय व्याधि को समाप्त कर देता है।
- ☆ महामृत्युंजय दीक्षा से ग्रहदोष समाप्त होते हैं।
- ☆ महामृत्युंजय दीक्षा से भीतर ही भीतर सकारात्मक ऊर्जा तीव्र गति से वृद्धि करती है, इससे जीवन के तनाव समाप्त हो जाते हैं।
- ☆ महामृत्युंजय दीक्षा से साधक को अपने भीतर ओजस्विता, तेजस्विता, शौर्य और भरपूर पौरुष का अनुभव होने लगता है।
- ☆ सद्गुरु से महामृत्युंजय दीक्षा प्राप्त करने के पश्चात् ही शिव साधना, मंत्र जप, अनुष्ठान आदि में शीघ्र सफलता प्राप्त होती है।
- ☆ जब भी गुरु कृपा प्राप्त हो उस समय पूर्ण समर्पण भाव से यह महामृत्युंजय दीक्षा प्राप्त करनी चाहिए और नियमित रूप से महामृत्युंजय मंत्र का जप अवश्य करना चाहिये।

महामृत्युंजय दीक्षा प्रति चरण - 3100/-